Toppersnotes®

Unleash the topper in you

UPSCzCSE

g j•› /•!”š#¢!

2 ƒ›*€ /•!]™*,

!˜!Û ™\Ú ™ ™ “

Y 2Y \ k F2

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

SIERRA INNOVATIONS

IAS

पेपर - 2 भाग - 2

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**विदेश नीति की प्रमुख बातें** • उद्देश्य • विदेश नीति के निर्धारक • अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रमुख शब्दावली • अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अतिरिक्त शब्दावली/अवधारणाएं • आर्थिक एकीकरण में प्रयुक्त शब्दावली ○ मुक्त व्यापार समझौता (FTA)	1
2.	**भारत की विदेश नीति का विकास** • प्राचीन विदेश नीति • मध्यकालीन विदेश नीति • ब्रिटिश काल की विदेश नीति • डॉ. एस. जयशंकर द्वारा स्वतंत्रता के बाद से भारत की विदेश नीति के चरण ○ आशावादी गुटनिरपेक्षता का युग (1946-1962) • गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) • बांडुंग सम्मेलन	7

3.	**भारत और उसके पड़ोसी देश**
	• नेबरहुड फर्स्ट नीति
	  ○ नेबरहुड फर्स्ट नीति के साथ चुनौतियां
	  ○ आगे की राह
	• भारत-अफगानिस्तान
	  ○ ऐतिहासिक संबंध
	  ○ सहयोग के क्षेत्र
	  ○ भारत के प्रयासों में चुनौतियां
	• भारत-श्रीलंका संबंध
	  ○ ऐतिहासिक संबंध
	  ○ सहयोग के क्षेत्र
	  ○ चुनौतियां
	• भारत-मालदीव संबंध
	• सहयोग के क्षेत्र
	• चुनौतियां
	• आगे की राह
	• **भारत-म्यांमार संबंध**
	  ○ ऐतिहासिक संबंध
	  ○ सहयोग के क्षेत्र
	  ○ चुनौतियां
	  ○ आगे की राह
	• **भारत-नेपाल संबंध**
		17

	○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियां ○ आगे की राह: • **भारत-बांग्लादेश संबंध** ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ रिश्ते में चुनौतियां ○ आगे की राह • **भारत-चीन संबंध** ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ भारत-चीन संबंधों में चुनौतियां ○ आगे की राह • **भारत-पाकिस्तान संबंध** ○ भारत-पाक संबंधों की समयरेखा ○ सहयोग के क्षेत्र ○ भारत-पाकिस्तान के बीच लंबित मुद्दे ○ भारत-पाकिस्तान के बीच चुनौतियां ○ आगे की राह • **भारत-भूटान संबंध** ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियाँ ○ आगे की राह	
4.	**भारत-अमेरिका संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियाँ • आगे की राह	**75**
5.	**भारत-कनाडा संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियाँ • आगे की राह	**82**
6.	**भारत-रूस संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियाँ • आगे की राह	**85**
7.	**भारत और पश्चिम एशिया** • ऐतिहासिक संबंध • भारत के लिए पश्चिम एशिया का महत्व • चिंताएं/चुनौतियां • नव गतिविधि	**92**

	• भारत-ईरान संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियां ○ आगे की राह • भारत-इजरायल संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ भारत-इजरायल अभिसरण ○ सहयोग के क्षेत्र ○ भारत-इजरायल संबंधों में चुनौतियां ○ आगे की राह • भारत-UAE संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियां • भारत-तुर्की संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियां ○ आगे की राह • भारत-कतर संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-सऊदी अरब संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियां ○ आगे की राह	
8.	**भारत और मध्य एशियाई देश** • मध्य एशियाई देश: कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उजबेकिस्तान। ○ ऐतिहासिक संबंध ○ भारत के लिए मध्य एशिया का महत्व ○ जुड़ाव बढ़ाने के लिए भारत के प्रयास ○ चुनौतियाँ ○ आगे की राह • मध्य एशिया संयोजकता नीति • भारत-मध्य एशिया द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के तरीके: • भारत-कजाखस्तान ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-किर्गिस्तान ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-ताजिकिस्तान ○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-तुर्कमेनिस्तान	**111**

	○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-उजबेकिस्तान संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र	
9.	**भारत और दक्षिण पूर्व एशिया** • ऐतिहासिक संबंध • स्वतंत्रता के बाद संबंधों की समयरेखा • पूर्व की ओर देखो नीति (एलईपी) • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियां • भारत-वियतनाम संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियां • भारत-सिंगापुर संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-मलेशिया संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-इंडोनेशिया संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-थाईलैंड संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र	**124**
10.	**पूर्वी एशिया और प्रशांत** • भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियों ○ आगे की राह • भारत-न्यूजीलैंड संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र • भारत-जापान संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ द्वितीय-विश्व युद्ध पूर्व-युग ○ स्वतंत्र भारत और जापान ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियाँ ○ आगे की राह • भारत-दक्षिण कोरिया संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियों ○ आगे की राह	**138**

	• भारत और इंडो-पैसिफिक • आगे की राह	
11.	**हिंद महासागर** • हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) ○ हिंद महासागर का महत्व ○ आईओआर में भारत द्वारा उठाए गए शासन के विभिन्न कदम • भारत-मॉरीशस संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ भारत के लिए मॉरीशस का महत्व ○ भारत-मॉरीशस संबंधों के लिए चुनौतियां ○ आगे की राह ○ अध्याय १२	**155**
12.	**भारत-अफ्रीका संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • भारत के लिए अफ्रीका का महत्व • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियों • आगे की राह	**161**
13.	**भारत-यूरोप संबंध** • यूरोपीय संघ ○ भारत-यूरोपीय संघ संबंधों का ऐतिहासिक विश्लेषण ○ सहयोग के क्षेत्र ○ समस्याएं • भारत-जर्मनी संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियाँ ○ आगे की राह • भारत-फ्रांस संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियां ○ आगे की राह • भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध ○ सहयोग के क्षेत्र ○ संबद्ध चुनौतियां ○ आगे की राह	**167**
14.	**लैटिन अमेरिका और कैरिबियन (LAC) के साथ भारत के संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियाँ • आगे की राह : भारत के लिए अवसर • भारत-ब्राजील संबंध ○ ऐतिहासिक संबंध	**183**

	○ सहयोग के क्षेत्र ○ चुनौतियाँ ○ आगे की राह • MERCOSUR (मर्कोसुर) ○ MERCOSUR के साथ FTA के लाभ ○ चुनौतियां ○ आगे की राह • कैरीकॉम (CARICOM) ○ भारत-कैरिकॉम संबंधों का दायरा ○ नव गतिविधि ○ आगे की राह	
15.	**प्रवासी भारतीय** • भारत की प्रवासी नीति • प्रवासी भारतीयों के लिए महत्वपूर्ण पहल • प्रवासी भारतीयों का महत्व • भारतीय प्रवासियों के सामने चुनौतियां	**192**
16.	**महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान** • संयुक्त राष्ट्र संगठन (UNO) • संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसियां • अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष • विश्व बैंक • विश्व आर्थिक मंच (WEF) • राष्ट्रमंडल • विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) • विश्व व्यापार संगठन (WTO) • अन्य महत्वपूर्ण संयुक्त राष्ट्र संस्थान ○ संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) ○ संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद ○ संयुक्त राष्ट्र शस्त्र व्यापार संधि (ATT) ○ शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर) ○ संयुक्त राष्ट्र शांति सेना • अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) • स्थायी मध्यस्थता न्यायालय (PCA) • विविध संस्थान	**196**
17.	**वैश्विक समूह** • G-7 • G-20 • G-77 ○ भारत की भूमिका: • खाड़ी सहयोग परिषद ○ GCC के साथ भारत के संबंध • पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन (OPEC) • रायसीना संवाद (RD) • बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था (MECR) ○ परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG)	**215**

	○ अप्रसार संधि या NPT ○ ऑस्ट्रेलिया समूह (AG) ○ मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (MTCR) ○ वासेनार व्यवस्था ○ रासायनिक हथियार सम्मेलन (CWC), 1997 • एशिया - प्रशांत महासागरीय आर्थिक सहयोग • BRICS • भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका (IBSA) संवाद मंच • शंघाई सहयोग संगठन (SCO) • अश्गाबात समझौता • दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) ○ उद्देश्य- ○ सार्क का महत्व: • बांग्लादेश भूटान भारत नेपाल (BBIN) पहल • बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक) ○ उद्देश्य ○ बिम्सटेक के सिद्धांत ○ भारत के लिए बिम्सटेक का महत्व ○ बिम्सटेक के साथ चुनौतियां • दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (ASEAN) ○ उत्पत्ति: ○ भारत के लिए आसियान का महत्व • एशियाई विकास बैंक • अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन • क्वाड ग्रुपिंग • आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD) • ऑर्गेनिक ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (OIC) • क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP)	
18.	**महत्वपूर्ण मुद्दे** • दक्षिण चीन सागर संघर्ष • आर्मेनिया-अज़रबैजान संघर्ष • अरब स्प्रिंग और सीरियाई संकट • अरब स्प्रिंग	**249**
19.	**कूटनीति के बदलते क्षेत्र** • सॉफ्ट पावर(नम्र शक्ति) डिप्लोमेसी • नम्र शक्ति • भारत की जलवायु परिवर्तन कूटनीति • अंतरिक्ष कूटनीति	**253**

1
CHAPTER

विदेश नीति की मूलभूत तत्व

- **विदेश नीति:** अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्रीय हित के अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए एक राष्ट्र द्वारा अपनाए गए और पालन किए जाने वाले सिद्धांतों, निर्णयों और साधनों का समूह है।
- विदेश नीति राष्ट्रीय हित के लक्ष्यों को परिभाषित करती है और फिर राष्ट्रीय शक्ति के प्रयोग के माध्यम से इन्हें सुरक्षित करने का प्रयास करती है।

उद्देश्य

- अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना।
- समावेशी घरेलू विकास के लिए अनुकूल बाह्य वातावरण तैयार करना।
- यह सुनिश्चित करना कि वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज सुनी जाए और भारत विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण मुद्दों पर वैश्विक राय को प्रभावित करने में सक्षम हो ।
- भारतीय प्रवासियों को शामिल करना और विदेशों में उनकी उपस्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करना, साथ ही साथ उनके हितों की यथासंभव रक्षा करना।

विदेश नीति के निर्धारक

- **राज्य क्षेत्र का आकार:** व्यापक मानव और गैर-मानव संसाधन वाले राष्ट्रों में बड़ी शक्ति बनने की संभावना बेहतर होती है। जापान, मध्य पूर्व के देशों, इज़राइल आदि अपवाद है।
- **भूगोल:** भूमि की स्थलाकृति, उसकी उर्वरता, जलवायु और स्थान।
- **सामरिक संस्कृति:** ऐतिहासिक, दार्शनिक और पारंपरिक पहलु, मूल्य और नैतिकता जैसे भाईचारा, अहिंसा आदि।
- **सामाजिक संरचना:** सामाजिक समूहों की प्रकृति और संघर्ष और सद्भाव का स्तर जो उनके पारस्परिक संबंधों को निर्धारित करता है।
- **सरकारी संरचना:** सरकार की संरचना यानी संगठनात्मक एजेंसियाँ जो विदेश नीति निर्माण और कार्यान्वयन को संभालती हैं।
- **आंतरिक स्थिति:** किसी राष्ट्र के आंतरिक वातावरण में होने वाले आकस्मिक परिवर्तन, अशांति या विकार भी विदेश नीति की प्रकृति और विकास को प्रभावित करते हैं।
- **आवश्यकताएँ और लक्ष्य:** सुरक्षा और क्षेत्रीय अखंडता के साथ-साथ देश के आर्थिक लक्ष्य, और एक शांतिपूर्ण बाहरी वातावरण।
- **आर्थिक विकास का स्तर और प्रकृति औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण** विदेश नीति के महत्वपूर्ण कारक हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संरचना (वैश्विक सामरिक पर्यावरण):** प्रत्येक राष्ट्र की विदेश नीति उस शक्ति संरचना की प्रकृति से प्रभावित होती है जो अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में एक विशेष समय पर प्रचलित होती है।
- **कूटनीति**: यह अन्य राष्ट्रों के साथ संबंधों के दौरान विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करती है और यह विदेश नीति का एक निर्धारक भी है।
- वैश्विक और क्षेत्रीय चुनौतियाँ: वैश्विक शक्ति समीकरणों का बदलना, आतंकवाद, कट्टरवाद, क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता।
- **प्रौद्योगिकी:** तकनीकी विकास का स्तर और प्रकृति विदेश नीति के महत्वपूर्ण तत्व हैं।
- गठबंधन और अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ (द्विपक्षीय और बहुपक्षीय): अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ, समझौते, व्यापारिक खंड और गठबंधन विदेश नीति के प्रमुख निर्धारक हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रमुख शब्दावलियाँ

- **अभिकर्ता -** एक निकाय जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक हितधारक है।
- **सहायता-** रियायती आधार पर 2 विदेशी पार्टियों के बीच उत्पादों और सेवाओं का आदान-प्रदान; सशर्त या बिना शर्त हो सकता है।
- **गठबंधन-** युद्ध के समय दो अभिकर्ताओं के बीच हस्ताक्षर किए गए रक्षा समझौते, जो तभी कार्यरत होती है।
- **युद्धविराम**- शत्रु देशों द्वारा शत्रुता को रोकने और शांतिपूर्ण समाधान की तलाश करने का द्विपक्षीय प्रयास। उदाहरण: 1949 से 1978 तक अरब और इज़राइल के बीच युद्धविराम।
- **शरण -** एक सुरक्षित आश्रय को संदर्भित करता है।
- अर्द्ध-कानूनी प्रक्रिया जिसमें एक राज्य दूसरे राज्य के नागरिक को क्षेत्रीय सीमा के अन्दर सुरक्षा प्रदान करता है।
- **तुष्टीकरण-** संघर्ष से बचने के लिए आक्रामक राज्य की सभी माँगो को पूरा करने की नीति।
- **निरोध-** परिणामों का भय पैदा करके किसी देश को हतोत्साहित करने की कार्रवाई।
- **निरस्त्रीकरण-** विशिष्ट सशस्त्र प्रणालियों को कम करने, हटाने और समाप्त करने की राज्य की प्रक्रिया। यह आमतौर पर परमाणु हथियारों के संबंध में प्रयोग किया जाता है।
- **प्रत्यर्पण**- ऐसी स्थिति जिसमें एक राज्य एक पलायक को दूसरे में स्थानांतरित करता है।
- मुक्त व्यापार- द्विपक्षीय व्यापार प्रणाली जो बिना किसी बाधा के व्यापार की अनुमति देती है।
- **भू-राजनीति-** विदेश नीति विश्लेषण की एक विधि = भौगोलिक विशेषताओं के उपयोग के माध्यम से किसी राज्य के राजनीतिक आचरण की व्याख्या करना।
- **महान शक्तियाँ-** आर्थिक और सैन्य क्षमताओं के आधार पर वैश्विक राज्यों की रैंकिंग।
- **आधिपत्य-** दूसरों पर राज्य का राजनीतिक, आर्थिक या सैन्य वर्चस्व।
- **हॉट-परस्यू-** भूमि-आधारित गतिविधियाँ जहाँ एक राज्य राष्ट्रीय हित में अपनी क्षेत्रीय सीमा के बाहर किसी अपराधी का पीछा करने का अधिकार सुरक्षित रख सकता है।
- **बहुध्रुवीयता-** कई शक्तिशाली अभिकर्ताओं के साथ एक वैश्विक प्रणाली। उदाहरण: अमेरिका, चीन, रूस और भारत।
- **पैरा-कूटनीति**- पड़ोसी देशों के साथ राजनयिक संबंध बढ़ाने में राज्य सरकार की भूमिका।
- **प्रभावमंडल**- ऐसी स्थिति जिसमें एक बाहरी राज्य का दूसरे क्षेत्र पर आर्थिक या सैन्य आधिपत्य हो।
- **टैरिफ**- धन संग्रहण के लिए आयात कर; संरक्षणवाद के एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- **संधि और कन्वेंशन**-
  - **संधि** = अभिकर्ताओं द्वारा हस्ताक्षरित लिखित समझौता, अनुबंध में सहमति से सहमत विशिष्ट नियमों को स्वीकार करने के लिए हस्ताक्षर करने वाले दलों की आवश्यकता होती है।
  - **कन्वेंशन** = विशेष संधि जो सदस्य राज्यों द्वारा अनुसमर्थित होने के लिए एक समझौते का निर्माण करके एक वैश्विक मुद्दे की चर्चा का समापन करती है।

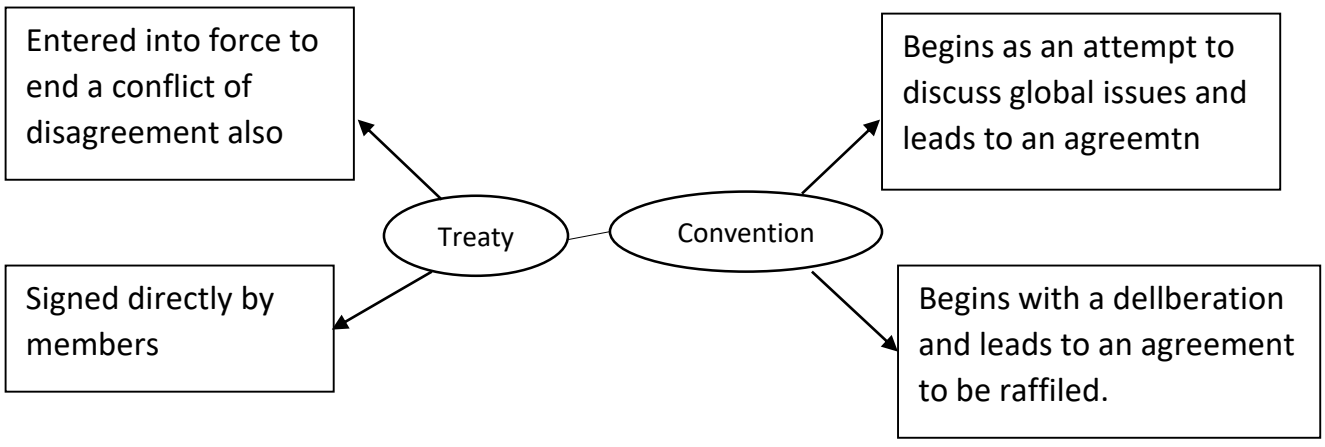

- **प्रोटोकॉल**- एक संधि जो संधि के मुख्य भाग में परिवर्तन की अनुमति देती है।

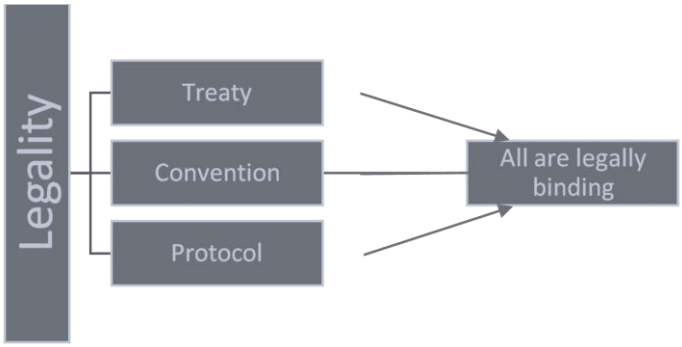

संधियों के हस्ताक्षर और अनुसमर्थन- जब कोई राज्य एक संधि पर हस्ताक्षर करता है, तो वह संधि में अपनी रुचि दर्शाता है। जब कोई राज्य किसी संधि की पुष्टि करता है तो उससे बाध्य होने की इच्छा व्यक्त करता है और उसकी **राष्ट्रीय संसद द्वारा अधिकृत संधि।**

Signature	**Obligation**	**Ratification**
Indicates that the state will takes steps to be bound	States to refrain from counter action.	Legally bids a state to implement the provisions of the treaties

- **वीटो**- अवांछित घटना को एकतरफा रोकने की क्षमता।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की अतिरिक्त शब्दावलीयाँ /अवधाराएँ

- **प्राकृतिक सहयोगी और सामरिक भागीदार:**
  - **प्राकृतिक सहयोगी:** वे देश जो समान सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक आदर्श साझा करते हैं, जैसा कि अमेरिका और यूके ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान किया था।
  - **सामरिक भागीदार:** वे देश जो समान मूल्यों को साझा नहीं करते हैं लेकिन क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सहयोग करते हैं।

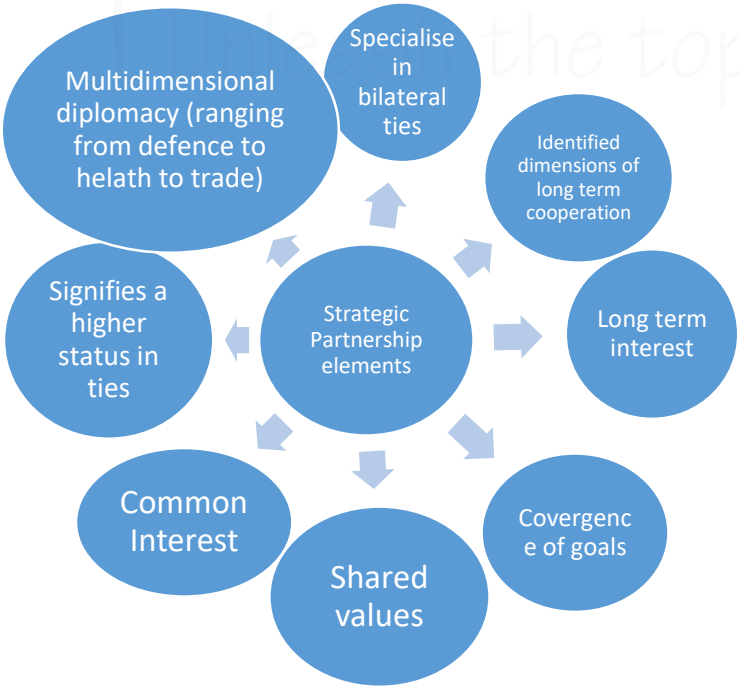

- **राष्ट्रीय हित:** एक अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में किसी देश की विदेश नीति के उद्देश्यों को निर्धारित करने के लिए विश्लेषणात्मक उपकरण।
- **गैर-पारंपरिक सुरक्षा जनित खतरे:** प्रवासन, गरीबी, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और सुरक्षा की जिम्मेदारी गैर-पारंपरिक सुरक्षा मुद्दों के कुछ उदाहरण हैं।
- **प्रत्यक्ष और गुप्त संचालन:**
- **प्रत्यक्ष संचालन:** जब कोई देश प्रत्यक्षत: कुछ करता है। वर्ष 1998 में, भारत ने परमाणु परीक्षण किए और खुद को परमाणु हथियार वाला राज्य घोषित किया।
- **गुप्त संचालन:** गुप्त रूप से किया गया। उदाहरण: रॉ, पाकिस्तान को नियंत्रण में रखने के लिए गुप्त अभियानों का उपयोग करता है।
- **कूटनीतिक दौर :** अंतर्राष्ट्रीय राज्य व्यवस्था द्वारा उपयोग किए जाने वाले वार्ता मंच ।
    - **पहला दौर :** आधिकारिक कूटनीति, राज्यों के प्रमुख, राजनयिक आदि मुद्दों को हल करने के लिए बातचीत करते हैं।
    - **दूसरा दौर :** गैर-सरकारी अभिकर्ता जैसे गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाजों, व्यापारिक घरानों, मीडियाकर्मियों और यहां तक कि संघर्ष समाधान विशेषज्ञों का उपयोग मुद्दों को हल करने के लिए बातचीत करता है।
    - **बहुदौर :** डॉ. लुई डायमंड ने कूटनीति के 9 अलग-अलग ट्रैक की पहचान की।

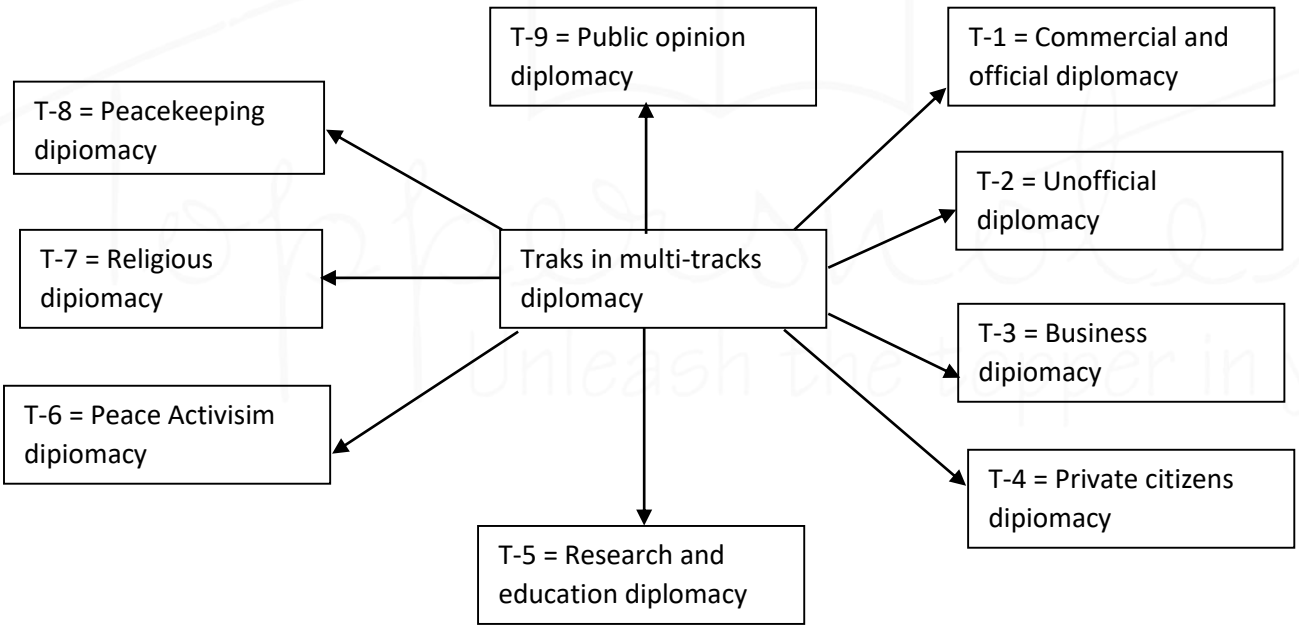

- **निवल सुरक्षा प्रदाता:** एक ऐसे देश का वर्णन करें, जो एक स्थिर, शांतिपूर्ण और सुरक्षित पड़ोस सुनिश्चित करने में सक्षम हो।
- **बैकचैनल डिप्लोमेसी:** जब दो दुश्मन एक राजनयिक सफलता बनाने के लिए गुप्त चैनलों के माध्यम से संवाद करते हैं। बराक ओबामा और हसन रूहानी ने बैकचैनल राजनयिक वार्ता शुरू की, जिसके परिणामस्वरूप 2015 में अमेरिका और ईरान के बीच परमाणु समझौता हुआ।
- **पिंग-पोंग कूटनीति:** राजनयिक मंच दो देशों के बीच संचार के लिए खुले हैं। उदाहरण: यूएस-चीन ने 1970 के दशक की शुरुआत में संचार लाइनें स्थापित करने के लिए टेबल टेनिस खिलाड़ियों का आदान-प्रदान शुरू किया, जिसके कारण निक्सन की चीन यात्रा हुई।
- **सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी:** एक प्रकार की कूटनीति जिसका उपयोग राज्य द्वारा सैन्य बल का सहारा लिए बिना या प्रलोभन के रूप में वित्तीय प्रोत्साहन की पेशकश के बिना अपने घोषित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

आर्थिक एकीकरण में प्रयुक्त शब्दावली

- राज्य पहले चरण में एक **व्यापार निवेश रूपरेखा समझौते)TIFA**(के लिए सहमत हो सकते हैं।
  - जब दो देश व्यापार का विस्तार करना चाहते हैं और द्विपक्षीय समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं। 2009 में ASEAN-अमेरिका के बीच हस्ताक्षर किए।
- **द्विपक्षीय निवेश संधि,)BIT**(पर पहले चरण में समान स्तर पर विचार किया जा सकता है।
  - FDI को प्रोत्साहित करना और एक दूसरे के क्षेत्र में निवेशकों के निवेश की रक्षा करना। 1940 के दशक में, जर्मनी-पाकिस्तान ने दुनिया के पहले BIT पर हस्ताक्षर किए।

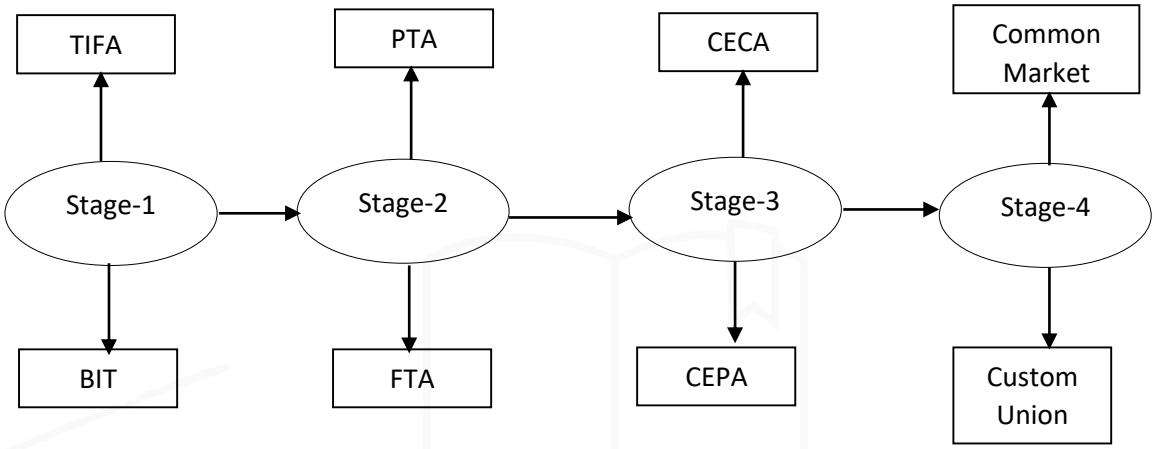

- **अधिमानी व्यापार समझौता (PTA):** एकीकरण प्रक्रिया में दूसरा चरण
- PTA – Preferential Trade Agreement
- सदस्य राज्य **गैर-टैरिफ बाधाओं को क्रम करके टैरिफ बाधाओं को** न्यून **करते है**।
- FTA के लिए एक कदम के रूप में काम करते हैं।

मुक्त व्यापार समझौता (FTA - Free Trade Agreement)

- उत्पादों और सेवाओं पर शुल्क समाप्त।
- व्यापार बाधाओं को कम करने से व्यवसायों को विशेषज्ञता और श्रम विभाजन को बढ़ाकर प्रतिस्पर्धा में बढ़त हासिल करने में मदद मिलती है।
- FTA से परे, देश **व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (CECA) या व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA)** पर हस्ताक्षर करते हैं।
- **CECA**: व्यापार को बढ़ावा देने के लिए शुल्कों का उदारीकरण करके एक निवेश प्रणाली का निर्माण करना।
- **CEPA**: निवेश, बौद्धिक संपदा, और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा पर समझौता और माल और सेवाओं के व्यापार का उदारीकरण।
- **CECA – Comprehensive Economic Cooperation Agreement**
- **CEPA – Comprehensive Economic Partnership Agreement**

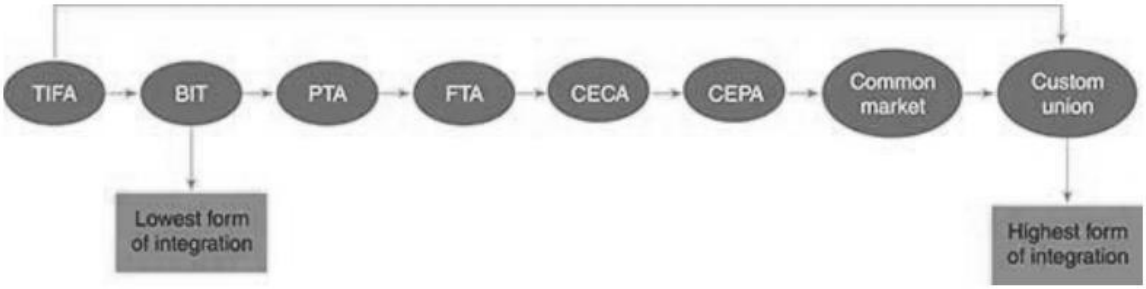

<u>सामान्य बाजार:</u> भाग लेने वाले राज्यों के बीच सभी तकनीकी, भौतिक और वित्तीय बाधाओं को दूर करना।

- पूंजी और श्रम एक देश से दूसरे देश में स्वतंत्र रूप से स्थानांतरित हो सकते हैं।
- भाग लेने वाले राज्यों के बीच सभी तकनीकी, भौतिक और वित्तीय बाधाओं को दूर करना।
- सीमा शुल्क संघ: आर्थिक एकीकरण का अधिकतम स्तर।
- जब राज्य सामूहिक रूप से समूह के भीतर पूर्ण मुक्त व्यापार की अनुमति देते हुए सभी आयातों पर एक समान आयात शुल्क लगाने का निर्णय लेते हैं।

2
CHAPTER

भारत की विदेश नीति का विकास

प्राचीन विदेश नीति

- **स्रोत:** प्राचीन भारतीय शास्त्रों से कई कूटनीतिक उदाहरण।
- **मनु-स्मृति -** एक राज्य में अधिकारियों की विभिन्न भूमिकाओं पर टिप्पणी करना।
- **चाणक्य का अर्थशास्त्र -** कूटनीतिक अभ्यास पर दुनिया का पहला व्यापक ग्रंथ, भारतीय कूटनीति का वर्णन करता है।
- **दूत**: मेगस्थनीज, डीमाचोस, डायोनिसियस आदि।
- **सिंधु घाटी सभ्यता:** समुद्र के रास्ते ओमान, दिलमुन, मगन और मेलुहा, मेसोपोटामिया के साथ व्यापार फला-फूला।
- **साक्ष्य**: कार्नेलियन, लैपिस लाजुली, तांबा, सोना, जार, सील आदि।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म

- **उत्पत्ति**: भारत
- **समृद्ध हुआ** : चीन, श्रीलंका, तिब्बत आदि में।

रामायण और भारतीय विदेश नीति

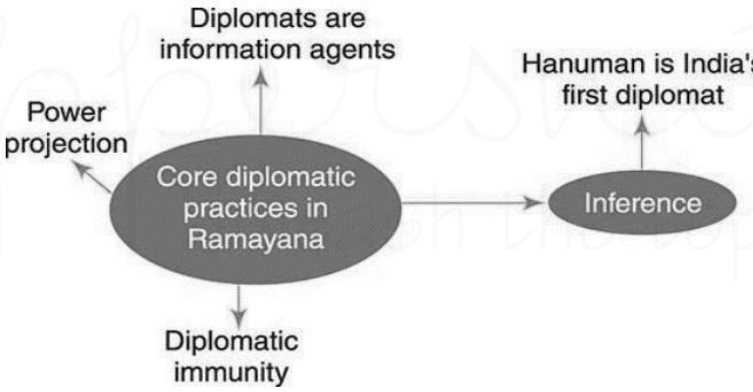

- **रामायण से अपनाए गए सिद्धांत:**
- राजनयिक के रूप में हनुमान : सीता और राम के बीच संवेदनशील जानकारी को विकृत किए बिना स्थानांतरित किया।
- हनुमान ने शक्ति प्रक्षेपक के रूप में काम किया: रावण के दरबार में राम की शक्ति का आभास कराया ।
- राजनयिक बचाव: विभीषण ने हनुमान का बचाव इस आधार पर किया कि वह एक विदेशी राज्य से एक दूत के रूप में लंका आए थे और उन्हें मौत की सजा नहीं दी जा सकती।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र और भारतीय विदेश नीति

- राज्य के शिल्प और विदेश नीति और कूटनीति के संचालन से संबंधित।

मंडल सिद्धांत अर्थात् राजमंडल या राज्यों का वृत्त

- विजिगीषु: विश्व विजेता।
- अरी: एक प्राकृतिक शत्रु जिसका क्षेत्र विजिगीषु के लिए संक्रामक है।
- मित्र: विजिगीषु का एक सहयोगी, जिसका क्षेत्र शत्रु या अरि से ठीक विपरीत है।
- अरिमित्र: शत्रु का सहयोगी, जो सहयोगी से तत्काल परे है।
- मित्र-मित्र: शत्रु के सहयोगी से तुरंत परे एक सहयोगी।

- अरिमित्र-मित्र: मित्र-मित्र के ठीक आगे स्थित शत्रु के सहयोगी का सहयोगी।
- पार्श्वनिग्रह: शत्रु, विजिगीषु का पिछला भाग। जो हमला नहीं करता है; बल्कि पीछे से परेशान करने की कोशिश करता है।
- उक्रंद: पार्श्वनिग्रह के पीछे विजिगीषु का सहयोगी।
- पार्श्वनिग्रहसार: शत्रु का सहयोगी, उक्रंद के पीछे पार्श्वनिग्रह का सहयोगी।
- अक्रंदसार: पार्श्वनिग्रहसार के पीछे उक्रंद का सहयोगी, अंततः एक सहयोगी।
- मध्यमा: विजिगीषु और अरी से सटे क्षेत्र के साथ मध्य राजा और दोनों से अधिक मजबूत।
- उदासीन: विजिगीषु, अरी और मध्यमा से तटस्थ और अधिक शक्तिशाली।

षडगुण सिद्धांत अर्थात् विदेश नीति के छह उपाय

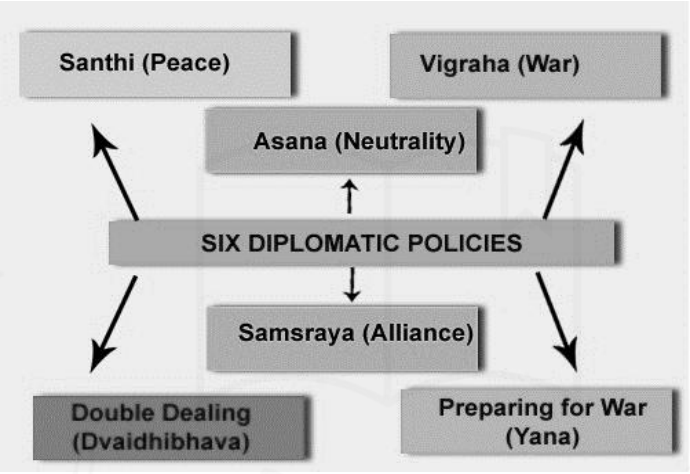

- **संधि** (जब कोई अपने शत्रु से अपेक्षाकृत कमजोर हो तब संधि करना)।
- **विग्रह** (शत्रु से बलवान होने पर शत्रुता अपनाना)।
- **आसन** (चुप रहना और शत्रु के कमजोर होने/आपदा/युद्ध में होने की प्रतीक्षा करना)।
- **यान** (एक अभियान का संचालन करना, जब कोई अपने दुश्मन से निश्चित रूप से मजबूत हो)।
- **संश्रय**: (किसी शक्तिशाली शत्रु के आक्रमण के समय दूसरे राजा की शरण में जाना)।
- **द्वैधिभाव**: (एक समय में एक राजा के साथ संधि और दूसरे के साथ विग्रह की नीति)।

राज्य का सप्तांग सिद्धांत राज्य के कुशल शासन के लिए

शाखा	अर्थ	वर्तमान में अर्थ
स्वामी	राजा	राष्ट्रपति
अमात्य	मंत्री	प्रधानमंत्री + कैबिनेट
जनपद	क्षेत्र और जनसंख्या	प्रादेशिक सीमाएँ
दुर्ग	किला	राष्ट्रपति भवन
कोष	ख़ज़ाना	वित्त मंत्रालय
बल	सेना	रक्षा बल
मित्र	मित्र	रूस, आदि जैसे देश।

मध्यकालीन विदेश नीति

- पश्चिमी तट पर भारत के दक्षिण के राज्यों ने अफ्रीका में अरब सागर के किनारे और हिंद महासागर के तटवर्ती राज्यों के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- पूर्वी-तट और दक्षिण के राज्यों ने सीलोन, बर्मा, थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलाया के साथ संबंध बनाए रखा।

- भारत में स्थित अफगान और तुर्की शासकों ने मध्य एशिया, फारस, अरब के देश, एशिया माइनर, ग्रीस, लेवेंट, तिब्बत और चीन के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- मुगलों ने पड़ोसियों और पुर्तगाली, फ्रेंच, ब्रिटिश आदि के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- अकबर के समय में, भारत: सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, आर्थिक कूटनीति का भागीदार था।
- भारतीय क्षेत्र बढ़ाने के लिए अपनाई गई विषय वस्तु- कठिन कूटनीति: लड़ाईयों के माध्यम से समेकित और नया क्षेत्र हासिल किया।
- उत्तरी भारत- मुगलों, अरबों, तुर्कों आदि ने भारत में धन प्राप्त करने और भारत में नए राज्यों को मजबूत करने के लिए भारत पर आक्रमण किया।
- दक्षिणी भारत- चोल, चेर, पाण्डेय आदि ने अपनी कूटनीतिक उन्नति के लिए मजबूत सेना और नौसेना का उपयोग किया।
- सॉफ्ट डिप्लोमेसी: संबंधों को मजबूत करने के लिए राजाओं द्वारा भेजे गए राजदूत और व्यापार

ब्रिटिश काल की विदेश नीति

- इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति ने नए समुद्री और व्यापारिक मार्गों की खोज की।
- कैप्टन हॉकिन्स और सर थॉमस रो को भारत में व्यापार के लिए सम्राट जहांगीर के दरबार में भेजा गया।
- भारत की खोज वर्ष 1498 में वास्को डी गामा नामक पुर्तगाली ने की थी।
- अंग्रेजी, फ्रेंच, पुर्तगाली और डच व्यापार के लिए भारत आए।
- भारत में दुर्गीकृत कारखानें स्थापित करके भारत को अपना उपनिवेश बना लिया।
- भारत से ब्रिटेन को कच्चे माल का निर्यात और तैयार माल का आयात (ब्रिटेन से भारत)।
- ईस्ट इंडियन एसोसिएशन, वैंकूवर में स्वदेश सेवक घर, सिएटल में यूनाइटेड इंडिया हाउस ने ब्रिटिश भारत के खिलाफ कूटनीति को मजबूत करने के लिए भारतीय राष्ट्रवादी मार्ग अपनाया।
- राजा महेंद्र प्रताप सिंह द्वारा काबुल में भारत की एक अस्थायी सरकार की स्थापना की गई।
- 1927 ई. के बाद, कांग्रेस द्वारा जारी पहली विदेश नीति का प्रारूप तैयार करने में नेहरू की सक्रिय भूमिका निभाई ।
- ब्रिटिश आक्रमण ने अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ सम्पर्क प्रारम्भ कराया ।
- सुभाष चन्द्र बोस की कूटनीतिक नीति ने जापान को अंग्रेजों के खिलाफ भारत की मदद करने के लिए मजबूर किया।
- भारत ने 1944 ई. में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में भाग लिया।
- अंतरिम सरकार ने संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, सोवियत संघ आदि के साथ कूटनीतिक संबंध बनाए रखा।

डॉ. एस. जयशंकर के अनुसार स्वतंत्रता के बाद से भारत की विदेश नीति के चरण

1. **आशावादी गुटनिरपेक्षता का युग (1946-1962)**
   - कूटनीति → सतत विकास के लिए सहकारी संबंधों का उपकरण।
   - पंचवर्षीय योजना की स्वीकृत नीति।
   - मिश्रित अर्थव्यवस्था के साथ-साथ समाज के समाजवादी स्वरूप पर बल दिया।
   - गरीबी को खत्म करने और सभी के लिए काम सुनिश्चित करने के लिए संसदीय सरकार के ढाँचे के भीतर आवश्यक सेवाओं और बुनियादी उद्योगों के समाजीकरण का प्रचार करना।
   - भारत ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का सदस्य बन गया।
   - भारत की विदेश नीति पंचशील सिद्धांतों पर आधारित थी।
   - भारत ने साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ाई में नव स्वतंत्र देशों का समर्थन किया।
   - NAM, पंचशील और बांडुंग सम्मेलन जैसी पहलों द्वारा तीसरी दुनिया के देशों को नेतृत्व प्रदान किया।
   - भारत - गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने वाला पहला देश है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM)

- **स्थापित**– 1961, बेलग्रेड में जब शीत युद्ध चरम पर था।

- **नेतृत्व**: यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज़ टीटो, मिस्र के जमाल अब्देल नासिर, भारत के जे. एल. नेहरू, घाना के क्वामे नकरुमाह और इंडोनेशिया के सुकर्णो।
- **पहला सम्मेलन:** बेलग्रेड, यूगोस्लाविया, सितंबर 1961 में।
- यह विश्व शांति बनाए रखने के लिए और उपनिवेशवाद से मुक्ति की प्रक्रिया में प्रमुख तत्व था।

उद्देश्य

- गुटनिरपेक्ष देशों की राष्ट्रीय स्वतंत्रता, संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा।
- साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नव-उपनिवेशवाद, नस्लवाद और विदेशी अधीनता के सभी रूपों के खिलाफ संघर्ष।

भारत के लिए NAM

- भारत की आर्थिक प्रगति पूर्व और पश्चिम दोनों से जुड़ी हुई थी।
- शीत युद्ध के युग के द्विध्रुवीय विभाजन का समाधान।
- शीत युद्ध में किसी भी महाशक्ति के साथ भागीदारी करके स्वतंत्रता को खतरे में डाले बिना भारत की सामरिक स्वायत्तता की रक्षा करना।

बांडुंग सम्मेलन

- पहला बड़े पैमाने का एफ्रो-एशियाई सम्मेलन (सबसे नया स्वतंत्र)।
- 18-24 अप्रैल 1955 को बांडुंग, पश्चिम जावा, इंडोनेशिया में हुआ।

सिद्धांत

1. मौलिक मानवाधिकारों का सम्मान।
2. सभी राष्ट्रों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान।
3. सभी जातियों के बीच समानता और सभी राष्ट्रों के बीच समानता की मान्यता।
4. किसी दूसरे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप या गैर-हस्तक्षेप।
5. संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप अपनी रक्षा करने के प्रत्येक राष्ट्र के अधिकार का सम्मान करें।
6. किसी भी महान शक्ति के हितों के लाभ के लिए सामूहिक रक्षा संधियों का उपयोग न करना और किसी भी देश द्वारा अन्य देशों के खिलाफ दबाव का उपयोग न करना।
7. किसी भी देश की क्षेत्रीय अखंडता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ आक्रमण करने, या बल प्रयोग करने से बचना।
8. संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप सभी अंतरराष्ट्रीय संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान
9. आपसी हितों और सहयोग को बढ़ावा देना।
10. न्याय और अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों का सम्मान।

पंचशील

- औपचारिक रूप से व्यापार और समागम पर समझौता जोकि तिब्बत और भारत के मध्य में प्रतिपादित हुआ ।
- 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षरित। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्रमुख केंद्र के रूप में अपनाया गया।

पंचशील सिद्धांत

- क्षेत्रीय अखंडता और एक दूसरे की संप्रभुता के लिए परस्पर सम्मान
- अनाक्रमण
- एक दूसरे के सैन्य मामलों में हस्तक्षेप न करना
- पारस्परिक लाभ और समानता
- शांतिपूर्ण सह - अस्तित्व
- बर्मा, चीन, लाओस, नेपाल, वियतनाम, यूगोस्लाविया और कंबोडिया इसके लिए सहमत हुए।

- भारत - संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य - 26 जून, 1945 को संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर किए।
- विदेश नीति को मजबूत करने के लिए 1954 में चीन और 1955 में रूस का दौरा किया।
- तीव्र औद्योगीकरण →व्यापक गरीबी से मुक्ति पाने का सबसे प्रभावी तरीका।
- बाहरी आक्रमण: संयुक्त राष्ट्र में कूटनीति के साथ पाकिस्तान और चीन पर सफलतापूर्वक नियंत्रण पाया।
- भारत ने कूटनीतिक रूप से तिब्बत का समर्थन किया और दलाई लामा को शरण दी।

उस समय की विदेश नीति की आलोचना

- भारत-चीन युद्ध-1962 में हार ने UNSC के लिए चीन का समर्थन करने के लिए भारत के रुख की आलोचना की।
- अमेरिका-चीन-पाकिस्तान की धुरी ने भारत को रणनीतिक और राजनीतिक रूप से अलग-थलग कर दिया।
- सोवियत संघ - भारत का सहयोगी लेकिन भारत-चीन युद्ध, 1962 में "तटस्थ" रहा।
- कश्मीर मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में ले जाने की भी आलोचना हुई है।
- पाकिस्तान के साथ कुल मिलाकर संबंधो मे सुधार नहीं हुआ ।
- NAM का अनुसरण करना कभी-कभी दोनों पक्षों के लिए प्रतिकूल होता है। उदाहरण के लिए, कोरियाई युद्ध के दौरान।

2. यथार्थवाद और प्रतिलाभ का दशक (1962-1971)

- गुटनिरपेक्षता की पूर्ववती नीति को जारी रखा।
- बर्मा के साथ फिर से सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित हुए।

समझौते/पहल

- भारतीय मूल के व्यक्तियों पर श्रीलंका (भंडारानायके-शास्त्री संधि) के साथ।
- 10 जनवरी, 1966 को सोवियत शासन के तहत पाकिस्तान के साथ ताशकंद घोषणा पर हस्ताक्षर किए। पाकिस्तान के साथ राजनयिक संबंध बहाल करने के लिए।
- अर्थशास्त्र, शरणार्थियों और अन्य प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए दोनों पक्षों ने सभी सशस्त्र बलों को 5 अगस्त, 1965 से पूर्व तैनात पदों पर वापस लेने पर सहमति व्यक्त की।
- अपने युद्धबंदियों को वापस लाने के लिए भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (ITEC), और विशेष राष्ट्रमंडल अफ्रीकी सहायता कार्यक्रम 1964 में शुरू किया गया।
- इस अवधि के दौरान भारत की विदेश नीति को स्वरुप प्रदान करने वाली घटनाएँ

बाहरी स्थिति

- भारत-चीन युद्ध (1962)- भारी आर्थिक प्रभाव।
- 1962 में क्यूबा मिसाइल संकट।
- 1968 में परमाणु अप्रसार संधि (NPT) की स्थापना।

1965 की स्थितियों को महसूस करने में असमर्थता

- भारत-पाक युद्ध 1965 →ताशकंद ने क्षेत्रीय यथास्थिति को बहाल किया।
- सोवियत संघ और यूएस ने पाकिस्तान की मदद करने के अपने इरादे घोषित कर दिए।

देश में तात्कालिक प्रतिकूल परिस्थितियां.

- देश में सूखे और अकाल की स्थिति बनी रही।
- रुपये की रियायतों के बदले अमेरिका से अनाज के आयात पर निर्भरता और हरित क्रांति।
- सुरक्षित वित्तीय मदद, विश्व बैंक और आई.एम.एफ. ने 1966 में भारतीय रुपये को कमजोर करने के लिए मजबूर किया।

रावलपिंडी-बीजिंग-वाशिंगटन गठजोड़

- अमेरिका-चीन सहयोग बढ़ाना और पाकिस्तान को अमेरिकी समर्थन प्रदान करना ।

- अगस्त 1971 में भारत-सोवियत शांति, मित्रता और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए गए। सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए गए ।

3. क्षेत्रीय दावे का चरण (1971-1991)

1971 से 1984 तक भारत की विदेश नीति

- 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध और बांग्लादेश।
- बांग्लादेश की स्वतंत्रता और पाकिस्तान को हराया, पाकिस्तान के सहयोगी यूएसए को भी धोका दिया। बांग्लादेश के जन्म के साथ ही पाकिस्तान ने अपना आधा क्षेत्र खो दिया।
- सोवियत संघ के साथ दोस्ती का एक नया अध्याय शुरू किया।
- **शिमला समझौता**: 1971 के बांग्लादेश युद्ध के तुरंत बाद पाकिस्तान के साथ शांति का पुनर्निर्माण।
- कश्मीर मसले को सुलझाने में असफल रहा ।
- दक्षिण एशिया के रणनीतिक वातावरण में परिवर्तन- पाकिस्तान की हार ने भारत को दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय ताकत के रूप में स्थापित किया।
- अपने निकटतम पड़ोसियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों पर बल दिया।
- बांग्लादेश के साथ एक दीर्घकालिक शांति और मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए।
- श्रीलंका के साथ संबंध- कच्चातीवू का द्वीप श्रीलंका को सौंप दिया।
- श्रीलंका में कठिनाई में फंसे तमिल भाइयों की सहायता की।
- 29 जुलाई 1987 को कोलंबो में भारत-श्रीलंका शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए और भारतीय शांति रक्षा बल (IPKF) श्रीलंका भेजा गया।

श्रीलंका (1974 और 1976), इंडोनेशिया (1974) और बांग्लादेश (1974 बेरुबारी संघ के मुद्दे को हल करके) के साथ सीमा और समुद्री क्षेत्र समझौता;

- बेरुबारी संघ वाद को हल करके श्रीलंका ,(1976 ,1974)इंडोनेशिया और बांग्लादेशके (1974) साथ सीमा और समुद्री क्षेत्र सामझौता -
- 1974 में मजबूत परमाणु रणनीति और परमाणु परीक्षण।
- हक के तहत पाकिस्तान के साथ संबंध: विभाजन के बाद से संबंध नाजुक रहे।
- पाकिस्तान ने 1974 में भारत के परमाणु परीक्षणों को डराने-धमकाने वाला कदम बताया।
- 1978, दोनों देशों ने राजनयिक संबंध बहाल करना चुना लेकिन पाकिस्तान को जल्द ही सैन्य तानाशाही के अधीन कर दिया गया
- चीन के साथ संबंध बढ़ाने के प्रयास किए गए।

भारत-सोवियत

- यूएसएसआर के साथ दोस्ती का एक नया अध्याय शुरू किया।
- चीन, पाकिस्तान और पश्चिम द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने में भारत की सहायता की।
- दिल्ली घोषणा, 1986- अहिंसा के गांधीवादी दर्शन का समर्थन किया।
- परमाणु, शक्ति, अंतरिक्ष और उच्च तापमान भौतिकी पर सहयोग किया।
- ईरान से दोस्ती।

भारत-अमेरिका

- राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को फिर से उन्मुख किया गया।
- उच्च प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और सुपर कम्प्यूटर की खरीद के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- आदान-प्रदान बढ़ाकर और व्यापार को बढ़ावा देकर संबंधों को मजबूत करें।

भारत-अफ्रीका